

शोधकर्ताओं का कहना है कि कई स्कूलों में तो पूरे एक साल से कम्प्यूटरों का उपयोग हो रहा है। और वैसे भी चौथी कक्षा के बच्चों पर इनका प्रतिकूल असर दिखने भी लगा है।

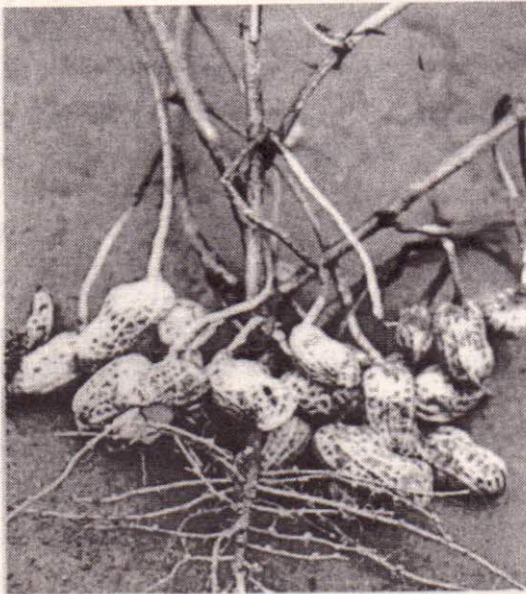
शोधकर्ताओं के मुताबिक सबसे सरल व्याख्या तो यही है कि कम्प्यूटर कोई अच्छी शिक्षण विधि नहीं है। उनका मत है कि इस मामले में लागतें तो एकदम स्पष्ट हैं मगर लाभ अस्पष्ट हैं। दरअसल यह साबित करने की जिम्मेदारी कम्प्यूटर शिक्षा के हिमायतियों पर होनी चाहिए कि कम्प्यूटर की मदद से बच्चे बेहतर सीखते हैं। (स्रोत फीचर्स)



## मूंगफली से प्लेग की रोकथाम

**बैं**गलोर के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइन्स की एम.एस. शैला व उनके साथियों ने जिनेटिक फेरबदलशुदा मूंगफली की एक ऐसी किस्म तैयार कर ली है जो भेड़ों व बकरियों को प्लेग से बचा सकती है। यह एक तरह का खाद्य टीका है। प्लेग की यह बीमारी अफ्रीका, मध्य पूर्व और दक्षिण एशिया की भेड़-बकरियों को होती है।

शैला के दल ने मूंगफली की जो किस्म तैयार की है



उसमें यह गुण है कि वह पीपीआर वायरस के आवरण में पाया जाने वाला प्रोटीन पैदा करती है। जब इन पौधों की पत्तियां जानवरों को खिलाई जाती हैं तो उनके शरीर में काफी मात्रा में एण्टीबॉडी उत्पन्न होती हैं। मगर अभी यह परीक्षण करना बाकी है कि क्या ये पत्तियां खाने के बाद भेड़-बकरियां प्लेग से सुरक्षित हो पाती हैं।

फिलहाल अफ्रीका में पीपीआर वायरस की एक किस्म के दुर्बल रूप का उपयोग टीकाकरण हेतु किया जाता है। इसी तरह का एक टीका दक्षिण एशिया के लिए तैयार किया जा रहा है। मगर इन पारम्परिक टीकों को बनाना काफी खर्चीला होता है और इन्हें रेफ्रिजरेटर में रखना पड़ता है क्योंकि गर्मी से ये बर्बाद हो जाते हैं। दूर दराज के इलाकों में यह एक समस्या है। यदि उपरोक्त खाद्य प्रोटीन कारगर रहता है, तो यह कहीं सस्ता पड़ेगा और रेफ्रिजरेटर वगैरह की ज़रूरत नहीं रहेगी।

मगर अभी दिल्ली दूर है। खाद्य टीकों के साथ एक बड़ी समस्या तो यह होती है कि इनकी खुराक निर्धारित करना मुश्किल होता है। यदि बहुत कम मात्रा दी गई तो कोई फायदा नहीं होगा। टीके के जितनी मात्रा दी जाती है उसमें से 99 फीसदी तो पेट में ही नष्ट हो जाती है। वैसे शरीर को उपलब्ध वास्तविक खुराक पर इस बात का भी असर पड़ता है कि जानवर किन हालातों में रह रहा है और